

TUESDAY

Wk 38 □ 260-105

ईश्वर स्वरूप - नित्यता

TDC - III, Paper - VI

AUGUST 2013

SEPTEMBER 2013

S M T W T F S

1 2 3

4 5 6 7 8 9 10

11 12 13 14 15 16 17

18 19 20 21 22 23 24

25 26 27 28

S M T W T F S

1 2 3 4 5 6 7

8 9 10 11 12 13 14

15 16 17 18 19 20 21

22 23 24 25 26 27 28

29 30

Dr. Rajiv Ranjan Pandey Assistant Professor,  
Philosophy, RBGR College, Maharajganj, Siwan.  
MB- 8709001909

## नित्यता (Eternal and Immutable)

ईश्वर का सबसे महत्वपूर्ण नाटिक गुण नित्यता है। प्रश्न उठता है कि कि जब ईश्वर को नित्य कहा जाता है तो उसका अर्थ क्या है? धर्म दार्शनिकों ने नित्यता को दो संदर्भों में विश्लेषित किया है — 1. द्रव्य की दृष्टि से 2. काल की दृष्टि से। द्रव्य की दृष्टि से ईश्वर को परम द्रव्य होने के अर्थ में नित्य माना जाता है। उनका अर्थ है कि ईश्वर अपने सत्त्व के संबंध में निर्विकार है, जबकि अपने आकस्मिक गुणों की दृष्टि से यह विकारी या परिवर्तनशील है।

किंतु नित्यता को इस रूप में लेने पर हम एक उभयतोपाश (Dilemma) में फँस जाते हैं। यदि ईश्वर की नित्यता जगत के परिवर्तनों से अछूती है तो ईश्वर और जगत के बीच कोई संबंध नहीं रह जाएगा। इससे ईश्वर अस्थायी नहीं रह जाएगा।

दूसरी तरफ अगर ईश्वर का संबंध जगत के साथ वास्तविक है तो ईश्वर निर्विकार नहीं रह जाएगा। इसलिए जगत की क्षणिक घटनाओं तथा अनित्य वस्तुओं के सापेक्ष ईश्वर की नित्यता नहीं समझी जा सकती है।

काल की दृष्टि से नित्यता के दो अर्थ किये जा सकते हैं — 1. कालातीत 2. सर्वकालीन

कालातीत का अर्थ है — ईश्वर काल से स्वतंत्र होने के अर्थ में नित्य है। तर्कशास्त्र के नियम इसी अर्थ में कालातीत होते हैं। आगस्टाइन और एब्रिवनस दोनों ने नित्यता की कालातीत के अर्थ में लिया है।

NOTES



आगस्टाइन और एक्विनस दोनों ने नित्यता की कालातीत के अर्थ में लिया है। आगस्टाइन कहते हैं कि सृष्टि के साथ ही ईश्वर ने देश व काल की उत्पत्ति की है। इसलिए ईश्वर देश व काल दोनों से अतीत है। काल ईश्वर ही नहीं, सृष्ट वस्तुओं की लाक्षणिक विशेषता है। दूसरी तरफ, वाइबिल के कुछ भागों से प्रदर्शित होता है कि यहूदी, ईसाई परंपरा में ईश्वर की सर्वकालीन होने के अर्थ में ही नित्य माना गया। ईश्वर इस अर्थ में नित्य है कि वह भूत, भविष्य तथा वर्तमान सभी कालों में बना रहता है।

इन दोनों अर्थों में नित्यता की स्वीकार करने पर कुछ आपत्तियाँ उठती हैं। ईश्वर की कालातीत मानने पर मनुष्य एवं ईश्वर के संबंध की व्याख्या असंभव हो जाती है। क्योंकि मनुष्य एवं वस्तुएं काल के अंतर्गत हैं जब कि ईश्वर काल से स्वतंत्र है। दूसरी तरफ ईश्वर की सर्वकालीन रूप से नित्य कहा जाय, तो ईश्वर भी काल के सापेक्ष बदलेगा, अतः वह नित्य नहीं रह पायेगा। इन समस्याओं के ही कारण कुछ दार्शनिकों ने ईश्वर की नित्यता की मूल्यों के आधार स्त्रोत के रूप में परिभाषित किया है। चूंकि मूल्य शाश्वत हैं, इसलिए ईश्वर इन मूल्यों का सृष्टा होने के कारण नित्य है। किंतु यह व्याख्या भी सहिनाई से मुक्त नहीं है, क्योंकि यदि सभी मूल्य ईश्वर में न हों तो वह पूर्ण नहीं है और अगर सभी मूल्य ईश्वर में हैं, तो ईश्वर की इनकी आवश्यकता क्या है?